

DPN 5723

Title: कुब्जिका स्तोत्र / KUBJIKĀ STOTRA

Run. No. 6414

Cat. No.

Micro. No.

Subject *Hymn स्तोत्र*

Religion: Hindu / Bauddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 19x9

Folios 3 Lines (in a page) 7

Compl. / Incompl.

Chapt. / act / Verses 1-13

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thyasaphu / one side yellow

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon:

श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री कुब्जिका देव्यै नमः ॥ ॥ श्री शिव उवाच ॥ शृणु देवी
प्रवक्ष्यामि कुब्जिका स्तोत्रमुत्तमम् ॥
इति कुब्जिका स्तोत्रम् समाप्तम् ॥

cms.

5

10

15

20

15

10

5

0

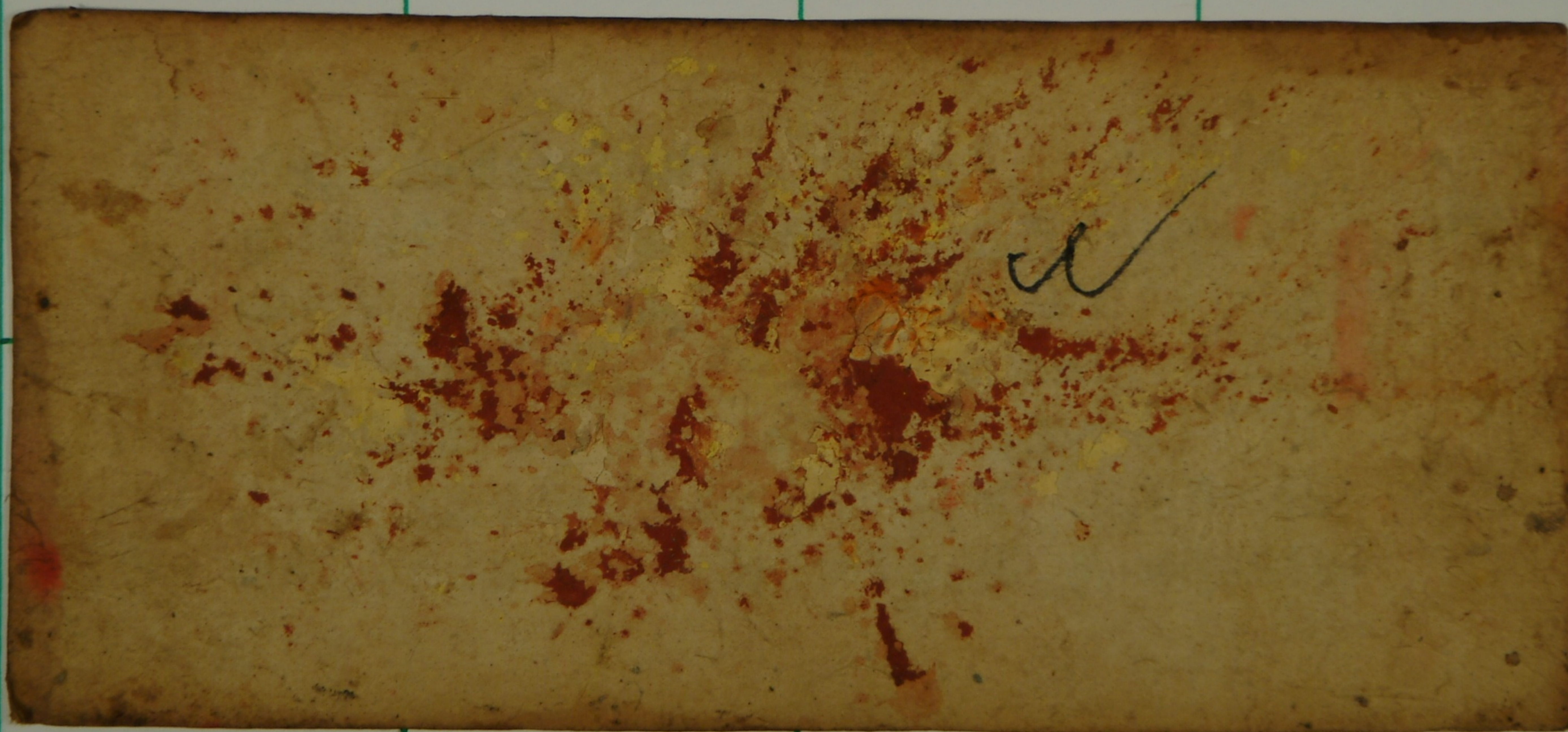
Cms.

5

10

15

20



स. कु. श्रीगणेशाय नमः ॥ १ ॥ श्रीकृष्णिकादेव्यै नमः ॥ २ ॥ श्रीशिव उवा
 च ॥ २ ॥ शृणु देवी प्रवक्ष्यामि कृष्णिकास्तोत्रमुत्तमम् ॥ एनमच्च प्रभावेन
 चरुणीजयशुभम् भवेत् ॥ १ ॥ नवस्मिन्नार्गलास्तोत्रमकीलकम्
 नहस्यकम् ॥ नस्तु नपि ध्यानं च न न्यासं न च अर्चनम् ॥ २ ॥ कृष्णिः
 कापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत् ॥ अतिशुभतरं मद्देवी देवानाम्
 पि दुर्लभम् ॥ ३ ॥ गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव यावति ॥ मारु
 णममोहनं वस्यस्तम्भनीं स्मृत्वा दिकम् ॥ ४ ॥ पाठमात्रेण स

॥ गुरु ॥
 ॥ १ ॥

मसिद्धि कृष्णिकास्तोत्रमुत्तमम् ॥ अथ मंत्र ॥ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं लौं जुं सं जल्यो
 ज्वल २ प्रज्वल २ मंत्र प्रवल २ ह्रस्वै लै क्षै फ र्स्वा हा ॥ ॐ नमस्ते कैरभा
 रीच नमस्ते महिषासनी ॥ ५ ॥ नमस्ते भुंभ हन्तेति निशुम्भा सुरघाति
 नी ॥ जाग्रतं हि महादेवी न जपसिद्धि म् कुरु स्वमे ॥ ६ ॥ ऐं कारि श्रुति
 पायै ह्रीं कारि प्रतिपालिका ॥ क्लीं कारि कालरूपिणै देवी ज रूपानमो
 स्तुते ॥ ७ ॥ चामुण्यचरणघाती च ये कारी वरदायिनी ॥ विद्ये नो भ
 यदानीत्यमनमस्ते मंत्ररूपिणी ॥ ८ ॥ धीं धीं धूर्जनैर्यो र्यत्नी वां वां

सं. कु.
२

वागीश्वरीतथा ॥ कौं कौं कौं कालिकादेवी शौ शौ शौ मेघु भ म् कुरु ॥ ६ ॥
हूं हूं हूं कारुण्ये जै जै जै भालनादिनीम् ॥ ओं श्रीं भै र बो भ डे भ
वानी तिन मो नमः ॥ १० ॥ अं कै चं रं तं ये यं शं विं दुरा म ह्य र हं क्षं म
ल पां जा म र चो र य र दी नं कुरु र स्वाहा ॥ ॥ पां पां पू या वं ती पू र्णा र्वा
खी र्व खे च री त था ॥ सां सी स न शनी सिद्धि म् कुरु स्व ज प मा त्र वा ॥ ११ ॥
इद म् तु कु र्वा जि का स्तो त्र म् मं त्र जा म त हे त वे ॥ अ भ ते च न दा त व्य म्
गो यं ते र क्ष या र्थे ति ॥ १२ ॥ वि ही न म् कृ त्ति का दे वी यं तु स न शनी म्

गुरु
२

सं. कु.
३

पठेत् ॥ न न स्य जायते सिद्धिं अरण्ये रुदिता सदा ॥ १३ ॥ शति
कुम्भिका स्तोत्रम् समानम् सुभम् ॥ ॥
श्राप मोचन मंत्र ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं लीं हूं ॐ ऐं क्षो भ य र मो ह्य र की ल
य र स्वाहा ॥

गुरु
२

